उपासकदशांगसूत्र (००१२५२)

मुख्य टाइटल
समर्पण
प्रकाशकीय
आमुख
स्व. श्रीमान् सेठ पुखराजजी शीशोदिया
प्रस्तावना
अनुक्रमणिका
उपाशकदशांगसूत्र
पहला अध्ययन
सार : संक्षेप ---------- ३
जम्बू की जिज्ञासा : सुधर्मा का उत्तर ---------- ६
आनन्द गाथापति ---------- १०
वैभव ---------- ११
सामाजिक प्रतिष्ठा ---------- ११
शिवनन्दा ---------- १२
कोल्लाक सन्निवेश ---------- १३
भगवान् महावीर का समवसरण ---------- १४
आनन्द द्वारा वन्दना ---------- १९
धर्म-देशना ---------- २०
आनन्द की प्रतिक्रिया ---------- २६
व्रतग्रहण ---------- २६
अहिंसाव्रत ---------- २६
सत्य-व्रत ---------- २७
अस्तेय-व्रत ---------- २७
स्वदार-सन्तोष ---------- २७
इच्छा-परिणाम ---------- २७
उपभोग-परिभोग-परिमाण ---------- २९
अनर्थ-दण्ड-विरमण ---------- ३७
व्रतग्रहण ---------- ३८
क. सम्यक्त्व के अतिचार ---------- ३८
ख. अहिंसा-व्रत के अतिचार ---------- ४०
ग. सत्य-व्रत के अतिचार ---------- ४१
घ. अस्तेय-व्रत के अतिचार ---------- ४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ङ. स्वदारसन्तोष-व्रत के अतिचार-- ४३
च. इच्छा-परिमाण-व्रत के अतिचार -- ४५
छ. दिग्व्रत के अतिचार-- ४६
ज. उपभोग-परिभोग-परिमाण-व्रत के अतिचार -- ४६
झ. अनर्थदण्ड-विरमण के अतिचार -- ४९
ञ. सामायिक-व्रत के अतिचार-- ५०
ट. देशावकाशिक-व्रत के अतिचार -- ५१
ठ. पोषधोपवास-व्रत के अतिचार -- ५२
ड. यथासंविभाग-व्रत के अतिचार-- ५३
ढ. मरणान्तिक संलेखना के अतिचार-- ५४
आनन्द द्वारा अभिग्रह-- ५६
आनन्द का भविष्य -- ६१
आनन्द : अवधिज्ञान -- ७४

दूसरा अध्ययन

सार : संक्षेप -- ८३
श्रमणोपासक कामदेव -- ८६
देव द्वारा पिशाच के रूप में उपसर्ग -- ८७
हाथी के रूप में उपसर्ग-- ९१
सर्प के रूप में उपसर्ग-- ९३
देव का पराभव : हिंसा पर अहिंसा की विजय -- ९४
भगवान् महावीर का पदार्पण : कामदेव द्वारा वन्दन-नमन-- ९९
भगवान् द्वारा कामदेव की वर्धापना-- १००
कामदेव : स्वर्गारोहण-- १०१

तीसरा अध्ययन

सार : संक्षेप -- १०३
श्रमणोपासक चुलनीपिता -- १०६
उपसर्गकारी देव : प्रादुर्भाव -- १०७
पुत्रवधु की धमकी-- १०७
चुनलीपिता की निर्भीकता -- १०७
बड़े पुत्र की हत्या -- १०८
मंझले व छोटे पुत्र की हत्या-- १०८
मातृवध की धमकी -- १०९
चुलनीपिता का क्षोभ : कोलाहल -- ११०
माता का आगमन : जिज्ञासा-- १११
चुलनीपिता का उत्तर -- १११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुलनीपिता द्वारा प्रायश्चित्त ---------- ११३
जीवन का उपासनामय अन्त ---------- ११५
चौथा अध्ययन
सार : संक्षेप ---------- ११७
श्रमणोपासक सुरादेव ---------- ११९
देव द्वारा पुत्रों की हत्या ---------- ११९
भीषण व्याधियों की धमकी ---------- १२०
सुरादेव का क्षोभ ---------- १२१
जीवन का उपसंहार ---------- १२२
पांचवां अध्ययन
सार : संक्षेप ---------- १२३
श्रमणोपासक चुल्लशतक ---------- १२५
देव द्वारा विघ्न ---------- १२५
सम्पत्ति-विनाश की धमकी ---------- १२६
विचलन : प्रायश्चित्त ---------- १२७
दिव्य गति ---------- १२७
छठा अध्ययन
सार : संक्षेप ---------- १२९
श्रमणोपासक कुंडकौलिक ---------- १३१
अशोकवाटिका में ध्यान-निरत ---------- १३२
देव द्वारा नियतिवाद का प्रतिपादन ---------- १३२
कुंडकौलिक का प्रश्न ---------- १३३
देव का उत्तर ---------- १३४
कुंडकौलिक द्वारा खण्डन ---------- १३४
देव की पराजय ---------- १३५
भगवान् द्वारा कुंडकौलिक की प्रशंसा : श्रमण-निर्ग्रन्थों को प्रेरणा ---------- १३५
शान्तिमय देहावसान ---------- १३६
सातवां अध्ययन
सार : संक्षेप ---------- १३८
आजीविकोपासक सकडालपुत्र ---------- १४२
सम्पत्ति : व्यवसाय ---------- १४३
देव द्वारा सूचना ---------- १४४
सकडालपुत्र की कल्पना ---------- १४८
भगवान् महावीर का सान्निध्य ---------- १४८
सकडालपुत्र पर प्रभाव ---------- १५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् का कुंडकारापण में पदार्पण ---------- १५०
नियतिवाद पर चर्चा ---------- १५०
बोधिलाभ ---------- १५३
सकडालपुत्र एवं अग्निमित्रा द्वारा व्रत-ग्रहण ---------- १५३
भगवान् का प्रस्थान ---------- १५७
गोशालक का आगमन ---------- १५७
सकडालपुत्र द्वारा उपेक्षा ---------- १५८
गोशालक द्वारा भगवान् का गुण-कीर्तन ---------- १५८
गोशालक का कुंभकारापण में आगमन ---------- १६३
निराशापूर्ण गमन ---------- १६४
देवकृत उपसर्ग ---------- १६४
अन्तःशुद्धि : आराधना : अन्त ---------- १६६

आठवां अध्ययन

सार : संक्षेप ---------- १६८
श्रमणोपासक महाशतक ---------- १७२
पत्नियां : उनकी सम्पत्ति ---------- १७४
महाशतक द्वारा व्रतसाधना ---------- १७५
रेवती की दुर्लालसा ---------- १७५
रेवती की मांस-मद्य-लोलपुता ---------- १७६
महाशतक : अध्यात्म की दिशा में ---------- १७८
महाशतक को डिगाने हेतु रेवती का कामुक उपक्रम ---------- १७९
महाशतक की उत्तरोत्तर साधना ---------- १८०
आरमण अनशन ---------- १८०
अवधिज्ञान का प्रादुर्भाव ---------- १८०
रेवती द्वारा पुन : असफल कुचेष्टा ---------- १८१
महाशतक द्वारा रेवती का दुर्गतिमय भविष्य-कथन ---------- १८१
रेवती का दुःखमय अन्त ---------- १८३
गौतम द्वारा भगवान् का प्रेरणा-सन्देश ---------- १८३
महाशतक द्वारा प्रायश्चित्त ---------- १८५

नौवां अध्ययन

सार : संक्षेप ---------- १८७
गाथापति नन्दिनीपिता ---------- १८८
व्रत-आराधना ---------- १८८
साधनामय जीवन : अवसान ---------- १८८

दसवां अध्ययन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सार : संक्षेप ---------- १९०
गाथापति सालिहीपिता ---------- १९१
सफल साधना ---------- १९१
उपसंहार ---------- १९३
संग्रह-गाथाएं ---------- १९४
परिशिष्ट १ : शब्दसूची ---------- १९९
परिशिष्ट २ : प्रयुक्त-ग्रन्थ-सूची ---------- २२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org